इकाई 22 प्रतिनिधि लोकतंत्र

इकाई की रूपरेखा

22.0 उद्देश्य

22.1 परिचय

22.2 प्रतिनिधि लोकतंत्र क्या है?

22.2.1 सीमित और अप्रत्यक्ष

22.2.2 निर्वाचक लोकतंत्र का पर्यावाची

22.3 प्रतिनिधि लोकतंत्र के विभिन्न दृष्टिकोण

22.3.1 बहुलवादी

22.3.2 अभिजात्यवादी

22.3.3 प्रतिद्वंद्वी विचारधाराएं

22.4 प्रतिनिधि लोकतंत्र के मौलिक सिद्धांत

22.4.1 लोकप्रिय संप्रभुता

22.4.2 राजनीतिक समानता

22.4.3 राजनीतिक स्वतंत्रता

22.5 प्रतिनिधि लोकतंत्र व्यावहार में

22.6 लोकतंत्र और चुनाव

22.6.1 चुनाव प्रक्रिया

22.7 लोकतंत्र और अलगाव

22.8 लोकतंत्र और जनमत

22.9 लिंग और लोकतंत्र : सहभागिता और प्रतिनिधित्व

22.10 लोकतंत्र और इंटरनेट

22.11 सारांश

22.12 कुछ उपयोगी संदर्भ

22.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

22.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप प्रतिनिधि लोकतंत्र के बारे में पढ़ेंगे, यह लोकतंत्र का एक रूप है। जिससे हम भलीभाँति परिचित हैं। इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप :

- प्रतिनिधि लोकतंत्र के अर्थ की व्याख्या कर पायेंगे;
- इसकी विभिन्न विचारधाराओं पर चर्चा कर सकेंगे;
- प्रतिनिधि लोकतंत्र के मौलिक सिद्धांतों का विस्तृत ब्यौरा दे पायेंगे;
- लोकतंत्र-चुनाव के अंतर्निहित कारकों का परीक्षण कर पायेंगे; और
- प्रतिनिधि लोकतंत्र से संबंधित कुछ समकालीन और महत्त्वपूर्ण मुद्दों का आलोचनात्मक परीक्षण कर लेंगे।

22.1 परिचय

इस इकाई में हम दुनिया में प्रचलित लोकतंत्र के एक रूप, प्रतिनिधि लोकतंत्र के बारे में जान पायेंगे। जैसा कि इसके नाम से पता चलता है कि इस प्रकार के लोकतंत्र में नागरिक अपने प्रतिनिधियों को आवधिक चुनावों के द्वारा चुनते हैं। नागरिकों के यही प्रतिनिधि उनकी अपेक्षाओं को जनमंच, जैसे विधानमण्डलों में जोरदार शब्दों में प्रस्तुत करते हैं। आप प्रतिनिधि लोकतंत्र को निर्वाचक लोकतंत्र (electoral democracy) का पर्यावाची मान सकते।

22.2 प्रतिनिधि लोकतंत्र क्या है?

22.2.1 सीमित और अप्रत्यक्ष

प्रतिनिधि लोकतंत्र, लोकतंत्र का सीमित और अप्रत्यक्ष रूप है : इसके सीमित अर्थ में सरकार में भागीदारी बिरले तथा संक्षिप्त होती है और प्रत्येक कुछ सालों में मत देने के अधिनियम से प्रतिबंधित होती है। इसके अप्रत्यक्ष अर्थ में जनता शक्ति का प्रयोग अपने आप नहीं करती है, लेकिन जनता उनको चुनती है, जो उनके पक्ष में शासन करेंगे। शासन का यह रूप प्रजातांत्रिक इस अर्थ में होता है कि प्रतिनिधित्व सरकार और शासित के बीच विश्वसनीय और प्रभावकारी संबंध स्थापित करता है।

प्रतिनिधि लोकतंत्र की खूबियों के अंतर्गत निम्नलिखित आते हैं :

- यह लोकतंत्र के व्यवहारिक रूप को प्रकट करता है क्यूँकि बढ़ी जनसंख्या सरकारी प्रक्रिया में वास्तविक सहभागीता नहीं हो सकती हैं।
- यह निर्णय लेने के भार से साधारण नागरिक को मुक्त करता है। इस प्रकार राजनीति में श्रम के विभाजन को संभव बनाता है।
- यह राजनीति से साधारण नागरिक को दूर रख कर स्थायित्व बरकरार रखता है। फलस्वरूप, उन्हें समझौतों को स्वीकार करने के लिये प्रोत्साहित करता है।

22.2.2 निर्वाचक लोकतंत्र का पर्यावाची

यद्यपि ये विशेषताएँ प्रतिनिधि लोकतंत्र की आवश्यक पूर्व शर्तें हो सकती हैं, इन्हें ही लोकतंत्र मान होने की गलती नहीं करनी चाहिए। प्रतिनिधि लोकतंत्र में प्रजातांत्रिक गुण, लोकप्रिय सहमति की विचारधारा है, जिसको मतदान के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

इस प्रकार प्रतिनिधि लोकतंत्र निर्वाचक लोकतंत्र का एक रूप होता है, जिसके अंतर्गत लोकप्रिय चुनाव को राजनीतिक सत्ता के एकमात्र वैध स्रोत के रूप में देखा जाता है। ऐसे चुनावों को जोकि राजनीतिक समानता के सिद्धांत का सम्मान करना चाहिए सर्वव्यापक वयस्क मताधिकार पर आधारित होता है, बिना जाति, रंग, मत, लिंग, धर्म या आर्थिक स्थिति के भेदभाव के आधार पर चुनावों को नियमित, खुला और स्पर्द्धात्मक होना चाहिए। प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का सार है, राजनीतिज्ञों की नागिरिकों के प्रति जवाबदेही।

संक्षेप में, प्रतिनिधि लोकतंत्र का सार इनमें निहित है :

- राजनीतिक बहुलवाद;
- राजनीतिक दर्शनों, आन्दोलनों, दलों के बीच खुली प्रतियोगिता और तदनुसार।

22.3 प्रतिनिधि लोकतंत्र के विभिन्न दृष्टिकोण

प्रतिनिधि लोकतंत्र के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। सर्वप्रथम, प्रतिनिधि लोकतंत्र में राजनीतिक शक्ति का अंततः दक्षतापूर्वक प्रयोग चुनाव के समय मतों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार प्रतिनिधि लोकतंत्र का गुण अंधे विशिष्ट वर्ग के शासन की क्षमता के साथ राजनीतिक सहभागिता के महत्त्वपूर्ण माप में निहित है। सरकार राजनीतिज्ञों के सुपुर्द होती है, लेकिन ये राजनीतिज्ञ लोकप्रिय दबावों के अनुकूल होने को बाध्य होते हैं। साधारण तथ्य है कि जनता प्रथम, उन्हें स्थान पर बैठाती है और बाद में उन्हें हटा देती है। मतदाता राजनीतिक बाजार में उसी प्रकार शक्ति का प्रयोग करता है, जैसा कि उपभोक्ता आर्थिक बाज़ार में करता है। जोसेफ शम्पीटर ने अपनी पुस्तक *पूँजीवाद समाजवाद और लोकतंत्र* (1976) में, प्रतिनिधि लोकतंत्र का उल्लेख राजनीतिक निर्णय लेने में संस्थागत व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया, जिसके अंतर्गत व्यक्ति लोगों के मत के लिए प्रतियोगी संघर्ष के आधार पर निर्णय करने की शक्ति प्राप्त करते हैं।

22.3.1 बहुलवादी

दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार, लोकतंत्र स्वभाव से बहुलवादी होता है। इसके वृहद अर्थ में, बहुलवाद विविधता या अनेकावस्था के प्रति प्रतिबद्ध होता है। संकुचित अर्थ में, बहुलवाद राजनीतिक शक्ति को बाँटने का सिद्धांत है। यह मानता है कि शक्ति चारों तरफ और समान रूप से समाज में बिखरी होती है और न कि कुछ हाथों में, जैसा कि सभ्रांतवादी (Elitists) दावा करते हैं। इस आधार पर बहुलवाद समान्यतया ''राजनीति'' समूह के सिद्धांत के रूप में देखा जाता है, जिसके अंतर्गत व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व संगठित समूहों, जातीय समूहों के सदस्यों के रूप में किया जाता है और इन समूहों की नीति प्रक्रिया तक पहुँच होती है।

22.3.2 अभिजात्यवादी

यहां एक ऐसे अल्पसंख्यक से तात्पर्य है के पास शक्ति, धन या सुविधा औचित्यपूर्ण या अन्य प्रकार से केन्द्रित होते हैं। अभिजात्यवाद विशिष्ट वर्ग या अल्पसंख्यक के शासन में विश्वास करना है। क्लासिकी अभिजात्यवाद ने जो कि मोस्का पौरेटो और मिशेल द्वारा विकसित हुआ, सामाजिक अस्तित्व के लिए विशिष्ट वर्ग के शासन को अनिवार्य और अपरिवर्त्तनशील तथ्य माना।

बहुसंख्यक शासन क्या है? कुछ लोग लोकतंत्र को बहुसंख्यक शासन मानते हैं।

बहुसंख्यक शासन एक चलन है जिसकी प्राथमिकता बहुसंख्यक की इच्छा माना है। बहुसंख्यकवाद क्या है? बहुसंख्यकवाद अल्पसंख्यकों और व्यक्तियों के समग्र उदासीनता को दर्शाता है।

22.3.3 प्रतिद्वंदी विचारधाराएँ

प्रतिनिधि लोकतंत्र के अर्थ और महत्त्व के संबंध में अनेक मतभेद हैं। विद्वानों द्वारा उठाये गये कुछ प्रश्न निम्न हैं :

- क्या यह राजनीतिक शक्ति के वास्तविक और सक्षम वितरण को सुनिश्चित करता है?
- क्या प्रजातांत्रिक प्रक्रियायें वास्तविक रूप से दीर्घकालीन लाभों को बढ़ावा देती हैं या स्व-पराजित (self-defeating) होती हैं?

- क्या राजनीतिक समानता आर्थिक समानता के साथ समायोजित हो सकती है?
- संक्षेप में, प्रतिनिधि लोकतंत्र की विभिन्न सिद्धांतकारों ने अलग-अलग ढंग से व्याख्या की है। इन व्याख्याओं में सबसे प्रमुख है बहुलवाद, अभिजात्यवाद, नव-दक्षिणपंथ (new-right) और मार्क्सवाद
- अनेक राजनीतिक चिन्तकों ने प्रतिनिधि लोकतंत्र को राजनीतिक संगठन के प्रत्येक अन्य रूप से साधारणतया श्रेष्ठ माना है। कुछ विचारक तर्क देते हैं कि प्रतिनिधि लोकतंत्र सरकार का एक प्रकार होता है, जो मानवीय अधिकारों की सबसे अच्छी तरह से रक्षा करता है, क्योंकि यह मानवीय आन्तरिक मूल्य और समानता के पहचान पर आधारित है।
- कुछ लोग मानते हैं कि लोकतंत्र सरकार का एक प्रकार है जो अधिकतर विवेकपूर्ण निर्णय लेता है, क्योंकि यह सामूहिक ज्ञान और समाज की पूरी जनसंख्या की विशेषता से लाभ उठा सकती है।
- दूसरे व्यक्तियों का मत है कि लोकतंत्र स्थिर और टिकाऊ (स्थायी) होता है, क्योंकि उसमें निर्वाचित नेता वैधता की मजबूत कसौटी से बंधे होते हैं।
- अभी भी कुछ अन्य की मान्यता है कि प्रतिनिधि लोकतंत्र आर्थिक विकास और सम्पन्नता के लिए सबसे अनुकूल होता है।
- कुछ ऐसा मानते हैं कि प्रतिनिधि लोकतंत्र में मानव (क्योंकि वे स्वतंत्र होते हैं) अपनी प्राकृतिक क्षमताओं और प्रतिभाओं का विकास करने में सबसे योग्य होते हैं। फिर भी, लोकतंत्र एक 'कार्य प्रगति में है' है– एक विकासशील आकांशा बनिस्पत एक उत्पादित सामग्री के।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) प्रतिनिधि लोकतंत्र से आप क्या समझते है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रतिनिधि लोकतंत्र के विभिन्न दृष्टिकोणों की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

22.4 प्रतिनिधि लोकतंत्र के मौलिक सिद्धांत

22.4.1 लोकप्रिय संप्रभुता

इसका अर्थ होता है कि सभी जन सत्ता का अंतिम स्रोत जनता होती है और सरकार वह कार्य करती है जो जनता चाहती है। चार प्रमुख शर्तों को लोकप्रिय संप्रभुता के अंतर्गत देखा जा सकता है :

- जनता की चाहत की सरकारी नीतियों में झलक होती है।
- लोग राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेते हैं।
- सूचना उपलब्ध होती है और वाद-विवाद किया जाता है।
- बहुमत का शासन, अर्थात नीतियाँ बहुसंख्यक जनता की चाहत के आधार पर निर्धारित की जाती हैं।

22.4.2 राजनीतिक समानता

इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को बिना जाति, रंग, मत, लिंग या धर्म के भेदभाव के आधार पर जन मामलों का निर्वहन करने में समान अधिकार प्राप्त होता है। लेकिन राजनीतिक विचारकों का मत था कि आर्थिक संदर्भ में ज्यादा असमानता अंततः राजनीतिक असमानता को जन्म दे सकती है। रॉबर्ट डॉल समस्या को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं ''यदि नागरिक आर्थिक संसाधनों में असमान हैं... तो वे राजनीतिक संसाधनों में भी असमान होंगे; और राजनीतिक समानता को प्राप्त करना असंभव होगा''। आधुनिक समाज में खास बातें सूचना के नियंत्रण में असमान प्रभाव तथा चुनाव प्रचार में आर्थिक सहायता का है। यह असमान प्रभाव पूर्ण लोकतंत्र की प्राप्ति में एक सख्त रोड़ा है।

अरस्तु के अनुसार लोकतंत्र के चलन के लिए एक आदर्श समाज वह था, जिसमें कि एक वृहद मध्यवर्ग हो– बिना एक अभिमानी और धनी तथा एक असंतुष्ट निर्धन वर्ग के।

22.4.3 राजनीतिक स्वतंत्रता

इस सिद्धांत के अनुसार, लोकतंत्र में नागरिकों की बुनियादी स्वतंत्रताओं जैसे कि बोलने की, मेलजोल करने की, विचरण और विवेक के प्रयोग में सरकार के हस्तक्षेप से रक्षा की जाती है।

यह कहा जाता है कि स्वतंत्रता और लोकतंत्र को अलग नहीं किया जा सकता है। स्वशासन की अवधारणा सिर्फ मतदान के अधिकार, सार्वजनिक दफ़्तर चलाने के अधिकार

तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अभिव्यक्ति का अधिकार किसी राजनीतिक दल, हित समूह या सामाजिक आन्दोलन का सदस्य बनने के अधिकार भी इसके अंतर्गत आते हैं।

लोकतंत्र के संचालन में, तथापि, यह उभर कर सामने आया है कि स्वतंत्रता इसका एक आवश्यक भाग होने की अपेक्षा इसके द्वारा खतरा महसूस कर सकती है। निम्न लोकतंत्र के विरुध मुख्य आलोचनाएँ है :

अ) 'बहुसंख्यक निरंकुशता' स्वतंत्रता को चुनौती देती है : बहुसंख्यकता निरंकुशता का अर्थ है बहुसंख्यकों द्वारा अल्पसंख्यकों की स्वतंत्रताओं और अधिकारों का दमन। यह माना जाता है कि अनियंत्रित बहुसंख्यक शासन अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ता है।

फिर भी, बहुसंख्यकों की निरंकुशता के आतंक को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जा सकता है। राबर्ट डॉल बताते हैं कि इस अवधारणा के पक्ष में कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों को राजनीतिक निर्णय-प्रक्रिया के वैकल्पिक अवस्थाओं के अंतर्गत अधिक सुरक्षा प्राप्त होती है।

ब) लोकतंत्र बुरे निर्णय लेता है : कुछ आलोचकों का मत है कि प्रतिनिधि लोकतंत्र, स्वभावतः बहुसंख्यकता का प्रतीक होता है, और इसलिए पूर्ण नहीं होता है। उनका कहना है कि इसकी कोई गारंटी नहीं है कि प्रतिनिधि लोकतंत्र सदैव ही अच्छे निर्णय लेगा है। बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक के ही समान अज्ञानी, निर्दय और लापरवाह हो सकता है और अविवेकी या अयोग्य नेताओं द्वारा भ्रमित किया जा सकता है।

22.5 प्रतिनिधि लोकतंत्र व्यावहार में

इस जानकारी के बाद, अब हम प्रतिनिधि लोकतंत्र के वास्तविक कार्यकलाप पर दृष्टिपात करेंगे। कार्यकारी लोकतंत्र की मुख्य विशेषताएं हैं :

- स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव;
- मुक्त और जिम्मेदार सरकार;
- नागरिक और राजनीतिक अधिकार;

नीचे दिया गया स्तंभ इन विशेषताओं को अच्छी तरह से प्रकट करता है।

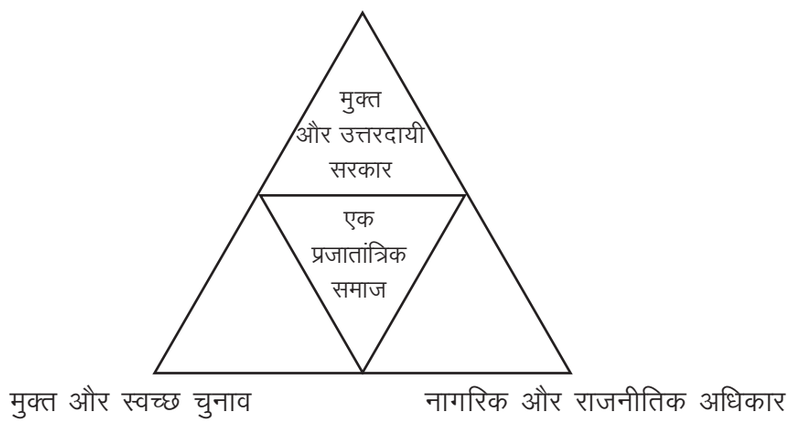

एक प्रजातांत्रिक पिरामिड

डेविड बोथम और केविन बॉयल (1995) : *लोकतंत्र,* पृष्ठ 28

राजनीतिक दल : राजनीतिक दल राजनीतिक प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका अदा करते हैं। बड़े पैमाने पर, राजनीतिक दल प्रजातांत्रिक प्रणाली के कार्यशील चरित्र को उजागर करते हैं। वे प्रणाली की संस्थाओं की क्रियाशीलता की लिए प्रमुख राजनीतिक गति प्रदान करते हैं।

आर.जी. गेट्टेल के अनुसार, एक राजनीतिक दल में कम या ज्यादा संगठित नागरिकों का एक समूह होता है, जो राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य करता है। अपने मताधिकार के प्रयोग के आधार पर उनका लक्ष्य सरकार पर नियंत्रण तथा अपनी सामान्य नीतियों को बढ़ावा देना होता है। एक राजनीतिक दल की कुछ अनिवार्य विशेषतायें हैं :

1) राजनीतिक दल संगठित करने वाले लोगों का मौलिक सिद्धांतों पर एक आम सहमति होती है।

2) वे अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए संवैधानिक तरीकों का इस्तेमाल करते हैं।

3) एक राजनीतिक दल का उद्देश्य समूह हित की अपेक्षा राष्ट्रीय हित को बढ़ावा देना होता है।

4) यह सार्वजनिक हित के उद्देश्य से राजनीतिक शक्ति को प्राप्त करता है।

राजनीतिक दल लोकतंत्र के आधार स्तंभ का निर्माण करते हैं और निम्नलिखित कार्यों का संपादन करते हैं :

i) *दल जनमत का निर्माण करते हैं* : राजनीतिक दल, जनता के फायदे के विभिन्न मुद्दें और समस्याऐं, जैसे आवास जीवन स्तर शिक्षा, विदेशी संबंधों, बजट इत्यादि को जोरदार शब्दों में सरकार के समक्ष रखते हैं।

ii) *दल चुनाव संचालन में एक भूमिका निभाते हैं* : विधायिका का चुनाव दल के आधार पर होता है। राजनीतिक दल पार्टी टिकट के लिए उपयुक्त उम्मीदवार का चुनाव करते हैं। मतदान के दिन दल अधिक से अधिक मतदाताओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं।

iii) *राजनीतिक दल सरकार बनाते हैं :* दल, जो बहुमत प्राप्त करता है, वह सरकार बनाता है। यदि किसी भी दल को बहुमत प्राप्त नहीं होता है तो दलों का एक मोर्चा, जोकि संयुक्त मोर्चा के नाम से जाना जाता है, सरकार बनाता है।

iv) *विरोधी दल सरकार पर नियंत्रण रखता है :* विरोधी दल सरकार के कार्यों और नीतियों पर नजर रखता है और उसकी कमियों और असफलताओं को उजागर करता है।

v) *राजनीतिक दल सरकार और लोगों के बीच संपर्क का कार्य करते है :* पार्टियाँ सरकार की नीतियों के बारे में लोगों को बताती है तथा लोगों की प्रतिक्रिया को संसद तथा सार्वजनिक अधिकारियों तक पहुँचाते हैं।

vi) *राजनीतिक दल लोगों को शिक्षा देते हैं :* राजनीतिक दल लोगों को उनके राजनीतिक अधिकारों और सरकार में उनके हितों के प्रति सजग बनाते हैं।

vii) राजनीतिक दल एकजुट शक्ति का कार्य करते हैं : राजनीतिक दल विभिन्न भागों के देशवासियों, सभी वर्गों के लोगों का समर्थन पाने के लिए कटिबद्ध होते हैं। अतः वे एकता सूत्र का कार्य करते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) लोकप्रिय संप्रभुता से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में उत्तर दें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) कार्यरत प्रतिनिधि लोकतंत्र पर एक निबंध लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

22.6 लोकतंत्र और चुनाव

आधुनिक प्रजातांत्रिक राज्यों में प्रतिनिधि सरकारें हैं। आधुनिक प्रजातांत्रिक राज्यों के लम्बे आकार और जनसंख्या के कारण सरकार के एक रूप में प्रत्यक्ष लोकतंत्र का प्रयोग कठिन हो जाता है। फिर भी, सभी आधुनिक लोकतंत्रों में अप्रत्यक्ष या प्रतिनिधि सरकारें हैं, जिन्हें लोगों के द्वारा चुना जाता है। ये प्रतिनिधि चुनाव के माध्यम से लोगों के द्वारा चुने जाते हैं। इस प्रकार चुनाव आधुनिक प्रतिनिधि लोकतंत्र के निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चुनाव लोगों का समर्थन पाने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच मुकाबला होता है। कभी कभी, एक व्यक्ति भी स्वतंत्र उम्मीदवार की तरह चुनाव लड़ सकता है।

पार्टी उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने के फायदे निम्न हैं :

i) राजनीतिक दल विशिष्ट नीतियों का अनुसरण करते हैं; अत:, जब एक उम्मीदवार दल का प्रतिनिधि होता है, मतदाताओं के लिए जानना आसान हो जाता है कि उसके कार्यक्रम क्या हैं।

ii) पार्टी उम्मीदवारों को चुनाव प्रचार आयोजित करने के लिए राजनीतिक दलों से कोष प्राप्त होता है।

iii) उम्मीदवार को चुनाव के दौरान पार्टी के द्वारा कार्यकर्ताएँ दिये जाते हैं।

iv) पार्टी के लोकप्रिय नेता दल उम्मीदवारों के लिए प्रचार करते हैं तथा उनकी चुनाव रैलियों को संबोधित करते हैं।

22.6.1 चुनाव प्रक्रिया

प्रजातांत्रिक प्रणाली में चुनाव समानता के सिद्धांत पर आधारित होता है, उदाहरणार्थ *एक व्यक्ति, एक मत*। सभी व्यक्तियों को बिना जाति, रंग, मत, लिंग, या धर्म के भेदभाव के खास राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं। इन अधिकारों में सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकार मत देने का अधिकार है। राजनीति में, प्रत्येक को समान अधिकार प्राप्त है – प्रत्येक व्यक्ति को सरकार के गठन में समान हक है।

गुप्त मतपत्र : मतदाता एक घेरे में अपने मत का प्रयोग गुप्त रूप से करते हैं, ताकि कोई भी उनके चयन को नहीं जान सके। प्रतिनिधि लोकतंत्र में गुप्त मतदान को प्रश्रय दिया जाता है; अन्यथा, मतदाता धमकी तथा अनुचित प्रभाव के भय से अपने चयन का खुले रूप से प्रदर्शन नहीं कर सकते।

निर्वाचन क्षेत्र : निर्वाचन क्षेत्रों में कार्यकुशलता के साथ चुनाव प्रक्रिया को संपादित किया जाता है। निर्वाचन क्षेत्र प्रादेशिक क्षेत्र होता है, जहाँ से उम्मीदवार चुनाव लड़ता है। यदि केवल एक ही व्यक्ति को निर्वाचन क्षेत्र से चुना जाता है, तो उसे *एक सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र* कहा जाता है। यदि कई प्रतिनिधि एक ही चुनाव क्षेत्र से चुने जाते हैं, तब उसे *बहु-सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र* कहा जाता है।

भारत में संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया एक स्वतंत्र संस्था, चुनाव आयोग के द्वारा संचालित और नियंत्रित की जाती है। यह स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव का भरोसा दिलाती है। चुनाव आयोग हमारे देश में चुनाव की तिथि को निश्चित तथा घोषित करता है। चुनाव आयोग की एक दूसरी बड़ी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है, यह सुनिश्चित करना है कि सत्ताधारी दल दूसरे दलों की तुलना में अनुचित लाभ न उठा ले। चुनाव प्रक्रिया कई औपचारिक दौरों से गुजरती है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत आते हैं :

1) चुनाव तिथि की घोषणा;

2) नामांकन-पत्र भरना;

3) आवेदनों की जाँच;

4) नाम वापसी;

5) अंतिम सूची का प्रकाशन;

6) प्रचार;

7) वोट डालना;

8) चुनाव परिणाम की घोषणा।

वास्तव में, जैसे ही चुनाव आयोग मतदान की तिथि की घोषणा करता है, राजनीतिक दल अपनी गतिविधियाँ प्रारंभ कर देते हैं। राजनीतिक दलों का प्रथम कार्य चुनाव लड़ने वाले अपने उम्मीदवारों का चयन करना होता है। आधुनिक चुनाव एक बोझिल प्रक्रिया है। इसके संपादन के लिए राजनीतिक दलों द्वारा गठित विशाल संगठन की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, चुनावों में आने वाले खर्चों की व्यवस्था राजनीतिक दल करते है।

i) **उम्मीदवारों का चयन**

प्रतिनिधि लोकतंत्र के संचालन में, राजनीतिक दलों की भूमिका अनिवार्य और अत्यधिक प्रमुख हो गयी है। वास्तव में, राजनीतिक दलों ने प्रजातांत्रिक राजनीति को संगठित ढाँचा प्रदान किया है। राजनीतिक दल अपने उम्मीदवारों की घोषणा, उनका समर्थन तथा उनके प्रचार का संचालन करते हैं।

प्रत्येक राजनीतिक दल विशेष कार्यक्रमों की घोषणा करता है तथा सत्ता में आने के बाद इन कार्यक्रमों को पूरा करने का वचन देता है। मतदाता किसी खास पार्टी के उम्मीदवार को उसके कार्यक्रमों तथा नीतियों के आधार पर वोट देते हैं।

ii) **नामांकन**

चुनाव की तिथि के घोषणा के बाद राजनीतिक दल को चयन प्रक्रिया के द्वारा उम्मीदवारों का चयन करना होता है। तत्पश्चात् उम्मीदवारों को अपना नामांकन-पत्र चुनाव आयोग द्वारा नियुक्त चुनाव कार्यालयों में भरना पड़ता है। नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि होती है। सभी नामांकन पत्रों के जमा होने के बाद उनकी जाँच की प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया को नामांकन पत्रों में दिये गयी सूचनाओं की सत्यता की जाँच के लिए अपनाया जाता है। यदि कोई संदेह होता है या कोई उम्मीदवार अयोग्य पाया जाता है, उसके/उसकी नामांकन-पत्र को रद्द कर दिया जाता है। जब जाँच प्रक्रिया खत्म हो जाती है, उम्मीदवारों को नाम वापसी की एक तिथि दी जाती है।

नाम वापसी की प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि (i) कम से कम मतों की बरबादी हो और (ii) मतपत्र पर सभी अंकित नाम सक्रिय उम्मीदवारों के हों।

iii) **चिह्न**

राजनीतिक दलों के चिह्न चुनाव आयोग द्वारा आवंटित किये जाते हैं। चुनाव आयोग प्रत्येक राजनीतिक दल को चुनाव चिह्न आवंटित करता है और सुनिश्चित करता है कि ये एक दूसरे से भिन्न हों। जिससे उनके प्रति मतदाताओं में भ्रम न पैदा हो। भारत में, चिह्नों का निम्न कारणों से महत्त्व है :

- वे अशिक्षित मतदाताओं के लिए सहायक होते हैं, जो उम्मीदवारों के नाम नहीं पढ़ सकते हैं।
- वे समान नामवाले दो उम्मीदवारों के बीच अंतर करने में सहायता पहुँचाते हैं।
- वे संबंधित राजनीतिक दल के आदर्श को प्रतिबंधित करते हैं।

iv) **प्रचार**

प्रचार के द्वारा एक उम्मीदवार दूसरे उम्मीदवार की अपेक्षा अपने पक्ष में मतदाताओं को वोट देने के लिए लुभाता है। प्रचार मतदान के 48 घंटे पहले बंद हो जाता है। प्रत्येक राजनीतिक दल और प्रत्येक उम्मीदवार अधिक सें अधिक मतदाताओं के पास पहुँचने की कोशिश करता है। चुनाव प्रक्रिया में कई तरह की प्रचार तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। कुछ निम्न हैं :

- आयोजित सार्वजनिक सभा जिस को दल के उम्मीदवारों और कई स्थानीय और राष्ट्रीय नेताओं द्वारा संबोधित किया जाता है।
- दीवारों पर पोस्टरों को चिपकाना और सड़क के किनारे बड़ी और छोटी होर्डिंग लगाना।
- अपने घोषणपत्र के मुख्य मुद्दों को पर्चों द्वारा स्पष्ट करना।
- विभिन्न उम्मीदवारों के समर्थन में जुलूस निकालना।
- दल के प्रभावी तथा स्थानीय लोगों द्वारा दरवाजे-दरवाजे आग्रह करना
- विभिन्न दल के नेताओं के भाषणों का रेडियो और दूरदर्शन प्रसारण।

iv) **मतों की गिनती और चुनाव नतीजे की घोषणा**

मतदान समाप्ति के बाद, मतपेटियों को सील करके मतगणना केन्द्रों पर ले जाया जाता है। मतगणना के दौरान, उम्मीदवार या उनके प्रतिनिधि उपस्थित होते हैं। मतगणना के बाद साधारण बहुमत प्राप्त करने वाले उम्मीदवार को निर्वाचित किया जाता है। कभी-कभी साधारण बहुमत समस्यायें उत्पन्न करता है। जब सिर्फ दो उम्मीदवार होते हैं, निर्वाचित उम्मीदवार बहुमत का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन, यदि दो या दो से अधिक उम्मीदवार होते हैं तो स्थिति वैसी नहीं होती है; उदाहरणस्वरूप यदि ए40, बी20, सी20, और डी20 मत प्राप्त करता है, तब ए को निर्वाचित घोषित किया जाता है। यद्यपि, 40 मत वास्तव में उसके विरुद्ध हैं।

चुनाव लोकतंत्र का बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि लोकतंत्र प्रणाली का समूची मोर्चाबंदी चुनाव कैसे होता है, उस पर निर्भर करती है।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) लोकतंत्र में चुनाव का महत्त्व क्यों होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या किसी व्यक्ति को वोट के अधिकार से वंचित किया जाना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) चुनाव आवेदन क्या होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

22.7 लोकतंत्र और विलगाव (ALIENATION)

विलगाव का अर्थ अपने वास्तविक या आवश्यक स्वभाव से अलग होना है। व्यवहार में, अधिकतर प्रजातांत्रिक प्रणालियों का कार्य निजी स्वायत्तता और लोकप्रिय शासन के मापदण्डों के संदर्भ में स्तर से नीचे होता है। आधुनिक संसार में लोकतंत्र सीमित और लोकतंत्र के अप्रत्यक्ष रूप के दौर से गुजर रहा है और इस प्रकार से स्वतंत्र नागरिक को विलगाव की ओर ले जाता है। यह लोकतंत्र उससे कुछ ज्यादा नहीं है, जिसको जोसेफ शममपीटर (Joseph Schumpeter) ने ''संस्थानिक व्यवस्था'' की संज्ञा दी है और जो उन, राजनीतिक निर्णयों तक पहुँचने के लिए होता है, जिसके तहत व्यक्ति मतों के प्रतियोगी संघर्ष के माध्यम से निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त करते हैं। इस संस्थानिक व्यवस्था के अर्थविहीन कर्मकांड में लोकप्रिय सहभागिता को कम करने के लिए उग्र लोकतंत्रवादियों ने आलोचना की है। जैसे राजनीतिज्ञों को हटाकर मात्र दूसरे राजनीतिज्ञों को लाने के लिए प्रत्येक कुछ वर्षों में मतदान करना। संक्षेप में, लोग कभी भी शासन नहीं करते हैं और सरकार और लोगों के बीच बढ़ती दूरी अचलता, उदासीनता और विलगाव के फैलने के रूप में झलकती है।

22.8 लोकतंत्र और जनमत

बहुत हद तक लोकतंत्र जनमत पर निर्भर करता है। प्रतिनिधि लोकतंत्र में, प्रत्येक सरकार को अपनी नीतियों के प्रति जनता की क्या प्रतिक्रिया होगी, यह सोचना पड़ता है। सभी दल शक्ति को हथियाना तथा बरकरार रखना चाहते हैं। अगले चुनाव में सत्ता में आना इस बात पर निर्भर करता है कि जनता उनके कार्य के बारे में क्या सोचती है, जब दल सत्ता में था।

सशक्त जनमत सत्ता में आने तथा एक दल या दलों के गठजोड़, जिसे मोर्चा कहा जाता है, सरकार के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि जनता सजग तथा समझदार है तथा अपने आप जानकारी प्राप्त करती है, तब सरकार जनता की आकाक्षाओं की अवहेलना का साध्य नहीं कर सकती है। यदि सरकार उनकी आकांक्षाओं का अनादर

करती है, वह तत्क्षण अलोकप्रिय हो जाती है। दूसरी तरफ, यदि जनता सजग और समझदार नहीं है, तो सरकार ग़ैरजिम्मेदार बन सकती है। उस वक्त, यह लोकतंत्र के आधार स्तंभ के लिए खतरा बन सकती है।

जनमत का निर्माण

जनमत विभिन्न प्रकार और कई संस्थाओं के योगदान से बनाया जाता है। स्वस्थ जनमत के लिए, नागरिकों को उनके चारों ओर उनके अपने देश में, और संसार में क्या हो रहा है, जानना चाहिए। एक देश की सरकार सिर्फ आन्तरिक समस्याओं के लिए ही नीतियाँ नहीं निर्धारित करती है, बल्कि विदेश नीति भी तय करती है। नागरिक को अपना निर्णय लेने से पहले विभिन्न मतों का ख्याल रखना चाहिए। यद्यपि लोकतंत्र के अच्छे संचालन के लिए, नागरिकों को विभिन्न दृष्टिकोणों से भली भाँति अवगत होने की आवश्यकता है। उन अभिकरणों में, प्रेस, इलेक्ट्रोनिक माध्यम और चलचित्र आते हैं जो स्वस्थ जनमत निर्माण में मदद करते हैं।

लोकतंत्र निर्णय प्रक्रिया में व्यक्ति को अपनी राय जाहिर करने का मौका देता है। इन सब के लिये, मुक्त वादविवाद तथा बहस की आवश्यकता होती है। प्रजातांत्रिक सरकार साधारण नागरिक को बहुत स्वतंत्रता प्रदान करती है। फिर भी, नागरिकों को स्वतंत्रता का प्रयोग जिम्मेदारी, बंधन और अनुशासन के साथ करना चाहिए। यदि लोगों को शिकायत है तो, उन्हें प्रजातांत्रिक प्रणाली के अभिकरणों के माध्यम से अवश्य दर्शाना चाहिए। नागरिकों के अनुशासनहीनतापूर्ण कार्यों से प्रजातांत्रिक व्यवस्था में रुकावटें पैदा हो सकती हैं।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) क्या किसी को लोकतंत्र में नागरिकता से वंचित रखा जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) राजनीतिक दल कैसे जनमत को व्यक्त करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

22.9 लिंग और लोकतंत्र : सहभागिता और प्रतिनिधित्व

लोकतंत्रीकरण के तीसरे चरण की शुरुआत 1970 के मध्य से, लैटिन अमेरिका पूर्वी और केन्द्रीय यूरोप के अनेक देशों और अफ्रीका तथा एशिया के कई भागों में हुई और इसने स्पर्द्धात्मक चुनावी राजनीति को प्रारंभ किया। इसे लोकतंत्र की विजय के रूप में देखा गया क्यूंकि निर्वाचक लोकतत्रों की संख्या 1974 में 39 से 1998 में 117 हो गयी।

फिर भी, पूर्व के लम्बे समय से कार्यरत लोकतंत्रों की तरह, नये लोकतंत्रों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व विधायिकाओं और कार्यपालिकाओं, दोनों में कम है। राजनीतिक नागरिकता लम्बे समय से महिला आन्दोलनों के संघर्ष का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य था। व्यस्क मताधिकार के लिए आंदोलन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में संसार के अनेक भागों में हुए, उनका आधार यह था कि मतदान का अधिकार और चुनावी प्रक्रियाओं में भाग लेना, नागरिकता का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा थे। यदि लोकतंत्र अब सभी नागरिकों को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के अधिकार का आश्वासन देता है, तो महिलाओं का प्रतिनिधित्व इतना कम क्यों होता है? क्या महिलाओं की कम सहभागिता का यह अर्थ है कि लोकतंत्र अप्रजातांत्रिक होते हैं?

जैसा कि पहले बताया गया है लोकतंत्रीकरण के सिद्धांतकारों ने लोकतंत्र के बारे में अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं :

- एक छोर पर यह न्यूनतम परिभाषा है, तुलनात्मक निर्वाचन ही सभी कुछ और पर्याप्त है।
- मध्यम परिभाषाएँ स्वतंत्रता और बहुलवाद की आवश्यकता पर भी ज़ोर देती है, जैसे नागरिक अधिकार और वाक स्वंतंत्रता, जिससे राज्य को एक उदारवाद लोकतंत्र माना जा सके।
- ये परिभाषाएं सहभागिता के अधिकार और सहभागिता के लिए सामर्थ्य के बीच कोई अंतर स्थापित नहीं करती हैं। केवल अत्यधिक काल्पनिक परिभाषाएं जोकि लोकतंत्र की गुणवत्ता को स्वीकार करती हैं, वे इस बात पर जोर देती है कि वृहद् अर्थ में लोकतंत्र पूरी नागरिकता की सुविधाओं का आनंद भी है।

नागरिकता सिर्फ नागरिक और राजनीतिक अधिकारों के ही संदर्भ में व्यक्त नहीं की जाती है, बल्कि आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के संदर्भ में भी, ताकि राजनीतिक क्षेत्र में सभी को पूर्ण सहभागिता का अवसर प्राप्त हो। लोकतंत्र तभी सशक्त और प्रभावकारी हो सकता है, जब नागरिक समाज में एक सक्रिय नागरिक भाग लें।

'सार्वजनिक' और 'निजी'

स्त्रीवादियों ने लम्बे समय से तर्क दिया है कि जिस ढंग से लोकतंत्र की व्याख्या, सैद्धांतिकरण और प्रैक्टिस की जाती है, उसमें अनेक समस्याएं है। उदारवादी राजनीतिक सिद्धांत सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बीच विभाजन पर आधारित है। इस ढाँचे के अंतर्गत पुरुष घर के प्रमुख होते हैं और सार्वजनिक जीवन में मूर्त्त व्यक्तियों की तरह सक्रिय होते हैं, जबकि महिलाओं को परंपरा की तरह निजी जिन्दगी तक सीमित रखा जाता है। अतः 'राजनीतिक' को एक अति गंभीर अर्थ में पुलिंग की तरह माना जाता है।

व्यावहारिक तौर पर, लोकतंत्रों में जिस तरीके से राजनीतिक गतिविधियाँ संचालित होती हैं और जिस प्रकार का महिलाओं का आम तौर पर स्वभाव होता है, कि वे खासकर

परम्परावादी राजनीतिक गतिविधियों के उच्च स्तरों पर पुरुषों की तुलना में बहुत कम भाग लेती हैं। जैसे :

- अनेक महिलाएँ राजनीति की शैली और सार को रुकावट मानती हैं।
- यदि वे राजनीतिक जीवन अपनाने का निर्णय करती हैं, तो अक्सर विजयी होने वाले सीट पर भी पार्टी सूची में जगह पाने में कठिनाइयाँ महसूस करती हैं।
- इसके अलावा, सार्वजनिक जीवन के दूसरे क्षेत्रों की ही तरह महिलाएँ निजी जीवन में अपनी जिम्मेदारियों की वजह से परम्परावादी राजनीतिक गतिविधि में पुरुषों के समानार्थ हिस्सा नहीं ले पाती हैं।

यह कहना गलत होगा कि लोकतंत्र की प्रकृति पर सहमति है लेनिन ने तर्क दिया था कि उदावादी लोकतंत्र एक स्क्रीन है, जो जनता के शोषण और दमन को छिपाता है। हाल में कैरोल पेटमैन ने तर्क दिया है कि लोकतंत्र को कार्यस्थल तक लागू होना चाहिए – जहाँ अधिक लोग अपने दिन का अधिकांश समय बिताते हैं – इससे पहले कि हम यह कहें कि हम प्रजातांत्रिक शर्तों के अनुसार जी रहे हैं।

लोकतंत्र की आलोचना का एक विभिन्न प्रकार यह तर्क देता हैं कि लोकतंत्र भी खतरनाक रूप से गलत हो सकता है। अरस्तु ने हमें बताया था कि लोकतंत्र के उचित ढंग से संचालन के लिए उसे एक स्थिर कानून व्यवस्था की जरूरत होती है। अन्यथा लोकतंत्र अनेक लोगों के दमनात्मक निरंकुश तंत्र के रूप में भीड़ का शासन बन सकता है। इसी तरह का विचार द टॉकवी का था कि लोकतंत्र एक नये प्रकार का अधिनायकवाद (बहुमत का अधिनायकवाद) की संभावना को उत्पन्न करता है। मेडिसन ने वर्गवाद के खतरे से आगाह किया था, जिसके अंतर्गत एक बड़ा या छोटा समूह लोगों के आमहित से कोई संबंध नहीं रखता है और जिसका प्रयास अपने हितों के लिए प्रजातांत्रिक प्रणाली से विमुख होना होता है।

आधुनिक लोकतंत्र अपने लिए नौकरशाही ढाँचे का निर्माण करता है। मैक्स वैबर के अनुसार नौकरशाही ढाँचा लोकतंत्र के संचालन में रोड़े अटकाता है, क्योंकि लोकतंत्र से उत्पन्न नौकरशाही का झुकाव प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का खात्मा करना होगा। पॉरेटो ने कहा था कि यद्यपि प्रजातांत्रिक समाज होने का दावा किया जा सकता है, लेकिन इस शासन व्यवस्था की बागडोर शक्तिशाली अभिजात्यवर्ग के हाथ में अनिवार्य रूप से होगी।

लेकिन, यह तर्क दिया जा सकता है कि शक्ति के पृथकरण और नियंत्रण और संतुलन की अवधारणाएँ निरंकुशतावाद को बहुत हद तक रोक सकती हैं। इससे ज्यादा हमें यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि जो लोग कानून का निर्माण करते हैं, वे उनको लागू भी करें।

22.10 लोकतंत्र और इंटरनेट

कोई भी दूसरा आविष्कार, इस नये तकनीकी युग में इंटरनेट की तरह इतनी शीघ्रता से जन मानस पर नहीं छाया है। इंटरनेट ने बड़ी शीघ्रता से सामूहिक प्रभाव और अतः निर्भरता को विकसित करने में अन्तर्राष्ट्रीय संबंध के विकास को गति प्रदान की है।

इंटरनेट ने लोकतंत्र को कई तरीकों से प्रभावित किया है। वास्तव में, सर्वाधिकारीवादी शासन का विरोध करने में इसकी भूमिका सकारात्मक है, यह सूचना पहुँचाने में मदद करता है और इस प्रकार, प्रश्न के द्वारा सरकार के एकाधिकार की जड़ खोदता है।

दूसरी तरफ, इंटरनेट लोकतंत्र के लिए इस सीमा तक समस्याएं उत्पन्न करता है, कि राज्य की नियामक क्षमता कम हो जाती है। इंटरनेट द्वारा समाजों की अंतर्राष्ट्रीय व्याख्या, सरकार की प्रभावकारी ढंग से शासन की क्षमता को समाप्त करता है। जहाँ तक राष्ट्रीय सुरक्षा का संबंध है, इंटरनेट ने आसमान संघर्ष के लिए नये द्वार खोल दिये हैं। राज्य जनव्यापी आक्रमणों की, अन्य राज्यों से नहीं बल्कि व्यक्तियों से झेल सकता है। यद्यपि, नई सूचना तकनीक संभवया, संतुलन में देखें तो, निहित शक्ति संरचनाओं को कमजोर करने की अपेक्षा बरकरार रखती है।

बोध प्रश्न 5

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) महिलाओं के बहुत कम राजनीतिक सहभागिता और प्रतिनिधित्व के कारणों का परीक्षण करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) किस हद तक इंटरनेट ने लोकतंत्र पर प्रभाव डाला है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

22.11 सारांश

इस इकाई में आपने प्रतिनिधि लोकतंत्र के बारे में पढ़ा है कि जो लोकतंत्र का आधुनिक ढाँचा है। अब आप लोकतंत्र के अर्थ और इसके विभिन्न दृष्टिकोणों पर प्रकाश डालने के योग्य हो गये होंगे। इस अध्याय में आप प्रतिनिधि लोकतंत्र के मुलभूत सिद्धांतों से भलीभाँति परिचित हो चुके होंगे ऐसी आशा है। लोकतंत्र वास्तव में कैसे कार्य करता है– निर्वाचन प्रणाली की व्याख्या की गयी है। अंततः और प्रमुखतया ऐसे समकालीन मुद्दों जैसे कि लिंग, विलगाव और जनमत पर भी यहाँ चर्चा की गई है।

22.12 कुछ उपयोगी संदर्भ

डॉल, रॉबर्ट (1956) *ए पैफरैंस टू डैमोक्रेडिक थ्योरी,* शिकागो, शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

डॉल, रॉबर्ट (1989) *डैमोक्रेसी एंड इट्स क्रिटिक्स,* येल विश्वविद्यालय प्रेस।

हेल्ड, डेविड (1987) *मॉडलज़ ऑफ डैमोक्रेसी स्टैनफोर्ड,* विश्वविद्यालय प्रेस।

पटनम, रॉवर्ट डी. (1993) *मेकिंग डैमोक्रेसी वर्क सिविल ट्रेडिशन्स इन मार्डन इटली* प्रिन्सटन विश्वविद्यालय प्रेस।

ब्रिथैम, डेविड एण्ड बॉयल, केविन (1995) डैमोक्रेसी– एट्टी क्वैश्चंस ऐंड आनसर्ज़, राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट, इण्डिया इन ऐसोसियेशन विद् यूनेस्को पब्लिशिंग।

22.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 22.2 देखें

2) भाग 22.3 देखें

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 22.4.1 देखें

2) भाग 22.5 देखें

बोध प्रश्न 3

1) भाग 22.6 देखें

2) भाग 22.6 देखें

3) भाग 22.6 देखें

बोध प्रश्न 4

1) भाग 22.7 देखें

2) भाग 22.8 देखें

बोध प्रश्न 5

1) भाग 22.9 देखें

2) भाग 22.10 देखें